कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 78–79

रेमी पौष्टिक गुणों से भरपूर हरा चारा और रेशा उत्पादन मे भी योगदान

डॉ मो असद, डॉ अंकित कुमार एवं अमिता मीणा
सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान संकाय,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ राजस्थान, भारत।
Email Id: moasad452@gmail.com

गर्मियों के दिनो में अधिकतर किसानों को अपनेजानवरो के लिए हरे चारे की समस्या होती है। ऐसे में रेमी की खेती उनकी समस्या का निस्तारण कर सकती है, यह कम लागत वाली खेती है और इससे पशुओं को वर्ष भर हरा चारा प्राप्त हो सकता है।

रेमी की खेती

रेमी एक झाड नुमा पौधा होता है जिसकी पत्तियां जानवरो के लिए उत्तम हरा चारा हैं। इसमें प्रोटीन अधिक मात्रा मेंपाया जाता है। इसलिए ये पशुओं के लिए बहुत लाभदायक होती है। रेमी की खेती उत्तर–पूर्वी राज्यों जैसे असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और नागालैंड जैसे राज्यों में अधिक की जाती है। यहां इसे रिहा या कुनखुरा नाम से भी जाना जाता है। रेमी का प्रयोग चारे के रूप में करने के साथ ही किसान इसके रेशे सेअधिक कमाई कर सकते हैं। इसका रेशा अधिक मजबूत होता है और कपड़ा उद्योग में कच्चे माल के रूप में परयोग किया जाता है।

मृदा एवं जलवायु

रेमी की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, उसमें जल निकासी की उचित व्यवस्था रहनी चाहिए। दोमट मृदा इसके लिए सबसे उत्तम मानी जाती है। फसल के विकास के लिए तापमान 25–30 डिग्री एवं पीएच 6.5 उत्तम रहता है

मृदा प्रबंध

अच्छी उत्पादन के लिए मृदा को उचित तरीके से तैयार करना चाहिए इसलिए फसल की बुवाई से पूर्व खेत की 2–3 हैरो द्वारा गहरी जुताई करनी चाहिए । 25–30 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद या कंपोस्ट मिलना चाहिए । मिट्टी की जांच के बाद उसमें 20 किलो नाइट्रोजन, 15 किलो फॉस्फोरस और 15 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाएं। फिर फसल की कटाई के बाद 38 किलो नाइट्रोजन, 20 किलो फॉस्फोरस और 20 किलो पोटाश खेत में डालना चाहिए।

बुवाई की विधि

रेमी के बीज को नर्सरी मे बुवाई करके पौध तैयार करने के पश्चात उसे खेतों में लगाया जाता है। इसके अलावा, जड़ से भी पौधे तैयार किए जाते हैं। एक जड़ से 25–30 पौधे तैयार हो जाते हैं। इसके अलावा, प्रकन्दयुक्त तने का भी प्रयोग रोपाई के लिए किया जा सकता है। एक हेक्टेयरे में रोपाई के लिए करीब 50,000 से 60,000 तक प्रकंदयुक्त तने की आवश्यकता पड़ती है। राइजोम की तुलना में इसकी लागत कम आती है। रेमी की बुवाई का सही समय अक्टूबर – फरवरी है और मई–जून में इसके बीज बनने लगते हैं।

पौष्टिक हरा चारा

रेमी को हरे चारे के रूप में प्रयोग किया जाता हैं, क्योंकि इसकी पत्तियों में 25 से 30 प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। रेमी की खेती करके किसानों को वर्ष भर हरा चारा प्राप्त हो सकता है और इसमें लागत भी अधिक नहीं आती। हर 20–25 दिन बाद एक फसल मिल जाती है। खाद और कृषि संगठण के मुताबिक, रेमी की एक हेक्टेयर फसल से हर साल 280 टन हरा चारा और 40 टन शुष्क पदार्थ प्राप्त हो जाता है। रेमी को देश के विभिन्न हिस्सों में पूरे साल हरे चारे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे डेयरी मे किसान अपनी आमदनी बढ़ाने में मदद मिलती है।

रेमी के फायदे

रेमी प्रोटीन युक्त हरा चारा होता है, इसलिए इसे खिलाने से पशुओं की दूध उत्पादन अधिक होता है। हल्दी की भाति इसमें भी एंटीबायोटिक गुण है, जिससे इसके सेवन से पशुओं में रोगो से लड़ने की छमता उत्पन्न होती है है। चारे के साथ– साथ किसान इससे रेशा भी प्राप्त कर सकते हैं। इसका रेशा कपड़ा उद्योग में कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। रेशे से किसानों को अतिरिक्त मुनाफा प्राप्त हो सकता है। इसका रेशा बाकी किसी भी रेशे से बहुत ज्यादा मजबूत माना जाता है।

अंतः फसल के रूप में

रेमी को दलहनी फसलों के साथ उगाकर किसान अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। अलावा, इसे नारियल, सुपारी, अनन्नास, पपीता, अमरूद आदि के साथ अंतःफसल के रूप में भी उगाया जा सकता है।

कटाई का समय

फसल की कटाई परिपक्व होने के 20–25 दिनों के अंतराल पर करते रहनी चाहिए। एक साल मे फसल की 10 –15 कटाई की जा सकती है। इसकी फसल 15–20 साल तक पैदावार दे सकता है।